50 Years of full Statehood of Manipur

Manipur literally meaning "A jewelled land" nestled deep within a lush green corner of North East India. It seems much like an exquisite work of art executed by superb hands of Nature and is indeed a State of exquisite natural beauty and splendors. Manipur lies on a melting pot of culture. This is the place where Rajashree Bhagyachandra created the famous Ras Lila, the classical dance of Manipur, out of his enchanting dream by the grace of Lord Krishna.

Bestowed with diverse flora and fauna, Manipur is home to a host of species hard to spot elsewhere. One with an inclination for tourist adventure will be greeted in this state with pleasant surprises ranging from virgin forests to cascading waterfalls, breath-taking hill-sites, valley-view and streams flowing to lakes levelled by shades of emerald.

The fish cuisines offered by the local eateries pamper one's palate with a flavour one would find missing even in the world-acclaimed foods elsewhere in the world. If you are a sports-freak, freak out at the Khuman Lampak Sports Complex at Imphal, a unique complex which houses all the major stadia in one complex, or be enthralled by the skilful matches of the State's indigenous games. One with a penchant for classical dances may enter into a show of Manipuri Dance and get entranced for hours. Of course, the piece-de-resistance is the unique handloom and handicraft products. Rows of open stalls in concrete sheds manned by women folk of the main market display such stuff in colourful varieties.

The hills of Manipur echo and reflect different sound and sights. They are inhabited by ethnic groups with a global outlook. Food habits there tilt heavily on non-vegetarian delicacies. Cross-topped church-spires adorn the countryside. Feminine dresses are often embroidered with traditional patterns.

The people of Manipur include Meitei, Naga, Kuki, Meitei Pangal and other colourful communities which have lived together in complete harmony for centuries. These are the people whose folklore, myths & legends, dances, indigenous games and martial arts, exotic handlooms & handicrafts are infested with the mystique of nature. The wonders has no end in Manipur.

Having teetered under the yoke of British colonialism from 1891 to 1947, it is to the credit of freedom loving Manipur is that their collective walk along the path of mainstream nationalism has not tottered in the post-independence era. 1949 heralded the merger of Manipur with the Union of India. In 1972, it became a full-fledged State with a 60 members Legislative Assembly out of which 19 are reserved for Scheduled Tribes and one for Scheduled Castes. The people of Manipur elect two MPs for the Lok Sabha and one MP for the Rajya Sabha.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp to commemorate 50 Years of full Statehood of Manipur.

Credits:

Stamps/FDC/Brochure	:	Shri Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Based on information received from the proponent

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका
BROCHURE

मणिपुर के पूर्ण राज्य के 50 वर्ष
50 Years of full Statehood of Manipur

मणिपुर के पूर्ण राज्य के 50 वर्ष

मणिपुर का शाब्दिक अर्थ है "मणियों की भूमि"। यह राज्य पूर्वोत्तर भारत के सबसे अधिक हरियाली वाले भाग में स्थित है। यह राज्य प्रकृति के भव्य हाथों से तैयार की गई एक उत्कृष्ट कलाकृति के समान है और निसंदेह, यह राज्य उत्कृष्ट प्राकृतिक सौंदर्य और वैभव से परिपूर्ण है। मणिपुर वह स्थान है जहां विभिन्न संस्कृतियों आदि का मिलन हुआ है। यह वह राज्य है जहां राजश्री भाग्यचंद्र ने भगवान कृष्ण की कृपा से अपने मनमोहक सपने को पूरा किया और मणिपुर के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य रासलीला की रचना की।

विविध वनस्पतियों और जीवों से सुशोभित मणिपुर ऐसी कई प्रजातियों का घर है, जिन्हें कहीं और देखा जाना कठिन है। यह राज्य पर्यटक रोमांच से ओत–प्रोत वालों का घने वनों, तेजी से गिरते झरनों, लुभावने पर्वतीय स्थलों, घाटी दृश्यों और एमरल्ड रंगों से युक्त समतल झीलों तक बहकर आने वाली नदियों से जुड़े सुखद आश्चर्यों के साथ स्वागत करता है।

यहां के स्थानीय भोजनालयों द्वारा मछली के ऐसे व्यंजन परोसे जाते हैं, जो विश्व में कहीं और नहीं मिलते, जिन्हें चखकर कोई भी विश्व–विख्यात व्यंजनों के स्वाद भूल सकता है। यदि आप खेल–कूद के शौकीन हैं, तो इम्फाल में स्थित खुमान लैम्पक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स आपके लिए एक ऐसा अनूठा परिसर है जिसमें सभी प्रमुख स्टेडियम एक ही परिसर में मौजूद हैं का आनंद ले सकते हैं अथवा वहां खेले जा रहे राज्य के स्थानीय खेलों के कौशलपूर्ण मैच से मंत्रमुग्ध हो सकते हैं। शास्त्रीय नृत्यों के प्रति रुचि रखने वाला व्यक्ति मणिपुरी नृत्य कार्यक्रम का घंटों आनंद ले सकता है। साथ ही, पीस–डी–रेसिस्टेंस एक अनूठा हथकरघा और हस्तशिल्प उत्पाद है, जिन्हें मुख्य बाजार की महिलाओं द्वारा संचालित कंक्रीट शेड में पंक्तियों में खोले गए स्टॉलों पर भिन्न–भिन्न प्रकार की बहुत–सी रंगीन वस्तुओं के साथ प्रदर्शित किया जाता हैं।

मणिपुर की पहाड़ियां विभिन्न ध्वनियों को प्रतिध्वनित और दृश्यों को प्रतिबिंबित करती हैं। यह राज्य वैश्विक दृष्टिकोण रखने वाले जनजातियों द्वारा बसाया गया है। यहां का खान–पान मुख्य रूप से मांसाहारी है। क्रॉस–टॉप चर्च–स्पायर ग्रामीण क्षेत्रों को सुशोभित करते हैं। महिलाओं की पोशाकों पर प्रायः पारंपरिक डिजाइनों की कढ़ाई की जाती है।

मणिपुर के लोग जिनमें मीतई, नागा, कुकी, मीतई पंगल और अन्य विभिन्न समुदाय आदि शामिल हैं, सदियों से पूर्ण सद्भावना के साथ एकजुट होकर रहते आ रहे हैं। ये वे लोग हैं, जिनकी लोककथाएं, मिथक एवं पौराणिक कथाएं, नृत्य, स्थानीय खेल और मार्शल आर्ट, शानदार हथकरघा एवं हस्तशिल्प प्रकृति के रहस्यों से प्रभावित रहे हैं। मणिपुर में अनंत चमत्कृतियां मौजूद है।

मणिपुर, 1891 से 1947 तक ब्रिटिश उपनिवेशवाद के बोझ तले दबा रहा। स्वतंत्रता–प्रेमी मणिपुरवासियों को श्रेय जाता है कि वे राष्ट्रवाद की मुख्यधारा के मार्ग पर सामूहिक रूप से चले और स्वातंत्रयोत्तर युग में भी अपने मार्ग से नहीं डगमगाए। 1949 में मणिपुर का भारत संघ में विलय हो गया। 1972 में यह 60 सदस्यों की विधान सभा के साथ एक पूर्ण राज्य बन गया, जिसमें से 19 अनुसूचित जनजाति और एक अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है। मणिपुर के लोग लोक सभा के लिए दो संसद सदस्यों और राज्य सभा के लिए एक संसद सदस्य का चुनाव करते हैं।

डाक विभाग मणिपुर राज्य के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री सुरेश कुमार

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	305100
Stamps Printed	:	305100
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00